OM 7 INITIAL_Page 1 and 2 10-07-2014 21:36 Page 5

नशाखोरी रोकने के लिए लोगों को जागरुक करना ज़रूरी..

रायपुर। मनुष्यों के लिए नशाखोरी एक अभिशाप के समान है। समाज में नशाखोरी की समस्या को खत्म करने के लिए लोगों को जागरुक करना ज़रूरी है। विशेषकर तम्बाकू से होने वाले नुकसान के बारे में सचेत करके ही लोगों को इसके सेवन से बचाया जा सकता है।

उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित 'नशा मुक्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का शुभारंभ करने के पश्चात् बी.वी.टी. राव,मुख्य स्टेशन प्रबंधक,रेलवे ने व्यक्त किये। उन्होंने प्रदर्शनी की प्रशंसा करते हुए कहा कि नशाखोरी करना मौत को निमंत्रण देना है। यह प्रदर्शनी यात्रियों के लिए प्रेरणादायक है। ऐसी प्रदर्शनियाँ निरंतर आयोजित होती रहनी चाहिए। रेलवे स्टेशन ऐसी जगह है जहां पर प्रतिदिन हज़ारों लोगों का आना-जाना होता है, ऐसी जगह पर नशा मुक्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन करने से निश्चित् रूप से हज़ारों यात्रियों को प्रेरणा मिलेगी।

रायपुर। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित 'नशा मुक्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का शुभारंभ करते हुए बी.वी.टी. राव,मुख्य स्टेशन प्रबंधक, ब्र.कु.सविता तथा रेलवे में कार्य करने वाले सहायक कर्मी।

ब्र.कु. सविता,वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका,ब्रह्माकुमारीज़ ने कहा कि हमारा शरीर एक मंदिर के समान है जिसमें चैतन्य आत्मा विराजमान रहती है, अत: हमें दुर्व्यसनों का सेवन कर इस मंदिर को अपवित्र नहीं करना चाहिए। उन्होंने बताया कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा किए गए सर्वेक्षण के मुताबिक नशाखोरी करने वाले लोगों में 75 प्रतिशत संख्या ऐसे युवकों की पाई गई जिनकी उम्र 25 वर्ष से कम थी।

उन्होंने युवाओं को नशाखोरी से बचाने के लिए अभिभावकों को सुझाव देते हुए कहा कि अपने सभी बच्चों को समान रूप से स्नेह दें। अपने बच्चों के लिए प्रतिदिन समय निकालकर थोड़ा समय उनके साथ व्यतीत करें, घर में नशे की कोई भी सामग्री नहीं रखें और स्वयं व्यसनों से मुक्त जीवन अपनाकर अपने बच्चों के आगे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करें।

PEACE OF MIND - TV CHANNEL

Cable network service
"C" Band with Mpeg4 receiver
Frequency:4054,
Polarisation:Horizontal, Degree: 83
Symbol:13230, Satellite:INSAT 4A,
Peace of Mind: (Vision Shiksha)

DTH Services
Videocon D2H: Channel no. 497,
Reliance Big TV: Channel no. 171

Smart Phone Service
Android | Blackberry | iPhone | iPad | Tablet | Visit: http://pmtv.in

Mobile Audio Service
Airtel - 55231 - Rs.2 per day
Vodafone - 552013 - Rs 1 per day
Reliance - 56300123 Rs 1 per day

अगर आप पीस ऑफ माइण्ड चैनल चालु करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 8104777111

सूचना– ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा सॉफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-
Email- mediabkm@gmail.com
M-8107119445

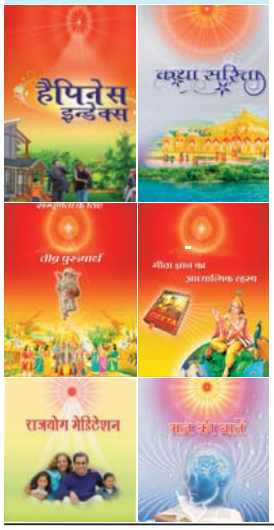

प्रश्न:- मैं एक छोटी ब्रह्माकुमारी हूँ, छोटी-छोटी बातों में उलझ जाती हूँ, व्यर्थ संकल्प तेज चलते हैं। छोटी परिस्थितियां भी बड़ी लगती है, संतुष्ट नहीं रह पाती। इन सभी बातों से छुटकारा पाने के लिए क्या पुरुषार्थ करें..?

उत्तर:- सबसे अच्छी बात है कि आपको अपनी स्थिति का ज्ञान है, जबकि अन्य कई तो स्वयं को ही राइट समझते हैं। नि:सन्देह यह स्थिति अति कमजोर स्थिति है। ऐसी स्थिति से तो कोई भी मनुष्य संतुष्ट नहीं रह सकता और न ही उसका ये संगमयुगी जीवन सफल होता है। स्वयं के विचारों को महान् बनाना है व योगबल से अपनी स्थिति को शक्तिशाली बनानी है। स्वयं को एक रस व अचल अडोल बनाने के लिए आँख खुलते ही ये संकल्प अन्तर्मन में कई बार भरें... मैं एक महान् आत्मा हूँ... मुझे भगवान मिल गये, मुझे संपूर्ण सत्य ज्ञान मिल गया, मैं तो सबकी उलझन मिटाने वाली हूँ...मैं शिव-शक्ति हूँ.... ये परिस्थितियां मेरे सामने कुछ भी नहीं है.... मैं तो त्यागी हूँ, तपस्वी हूँ। पहले 10 मिनट बार-बार ये संकल्प करें...इसे 21 दिन तक अवश्य करें। सारे दिन में प्रति घंटा दो बार स्वमान याद करे... मैं महान आत्मा हूँ और मैं मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ... इससे आपका चित्त शांत हो जायेगा। जितना-जितना स्वमान बढ़ेगा... आप बड़ी बनती जायेंगी व परिस्थितियां कमजोर पड़ती जायेंगी।

प्रश्न:- कई बार मुरली की धारणा करने में संकोच रहता है कि कहीं धारण कर, पूरा न कर सका तो... 100 गुणा पाप तो नहीं लग जायेगा। क्या धारणा की प्रतिज्ञा कर उसे पूरा न करने से ज्यादा पाप, उसे बिल्कुल न धारण करने से लगता है? मैं डबल माईन्ड रहता हूँ कि धारणा करूं या न करूं?

उत्तर:- आपका स्वयं में संशय आपको शक्तिहीन कर रहा है। प्रतिज्ञा में बल होता है व परमात्म बल मिलता है। धारणा ही नहीं करेंगे तो पतित ही रह जायेंगे, पावन कभी भी नहीं बन पायेंगे। 100 गुणा पाप का भय 1000 गुणा पाप कराता है। इसलिए इस विश्वास से सबकुछ धारण करो कि अब मुझे इस धारणा से कोई हटा नहीं सकता क्योंकि मेरे साथ परमात्म बल है। धारणा के बीज को योग का पानी भी दो। बिना योग अभ्यास के बुद्धि शुद्ध नहीं होती व बिना बुद्धि के शुद्ध हुए धारणा भी नहीं होगी। स्वयं भगवान का आना हुआ है, हम आत्माओं को सबकुछ धारण कराने। उसने ही कहा है, पवित्र बनने की प्रतिज्ञा करो। सो करनी है। पहले ही प्रतिज्ञा टूटने का भ्रम नहीं पालना है। जितने दिन भी अच्छी धारणा रहेगी, उतना ही श्रेष्ठ भाग्य बनेगा। प्रतिज्ञा टूटने के भय से धारणा ही न करना अति कमजोर आत्मा की निशानी है, परन्तु आप तो मास्टर सर्व शक्तिवान हो।

प्रश्न:- मेरा एक 16 वर्षीय भाई है। मैं चाहता हूँ कि वह संपूर्ण पवित्र बने, बुरे संग में आकर कलियुगी युवक न बनें, में उसे कैसे मदद कर सकता हूँ?

उत्तर:- आपके मन में आपके भाई के प्रति यह शुभ-भावना प्रशंसनीय है क्योंकि आजकल तमोप्रधान समय है, वातावरण ही तामसिक है, युवकों का उससे मुक्त रहना.. सहज काम नहीं है। उसका पवित्र रहना, उस पर ही निर्भर करेगा। उसे ज्ञान-योग कितना अच्छा लगता है, उस पर सारा आधार है। फिर भी आप उन्हें ज्ञान दें, योगी बनायें और सात्विक भोजन खिलायें। घर के माहौल को सात्विक बनायें। घर में सत्य साहित्य ही हो। जब भी आप उसे देखें तो इस दृष्टि से देखें कि वो एक पवित्र आत्मा है, इससे उसे काफी मदद व बल प्राप्त होगा। हो सके तो प्रतिदिन उसे आधा घंटा योग का दान अवश्य दें।

प्रश्न:- भगवान को किसने बनाया और उसने ये ऐसा संसार क्यों बनाया? क्या इस दुनिया को देखकर भगवान को दु:ख नहीं होता, यदि होता है तो वह सबके दु:ख दूर क्यों नहीं करता? क्या सभी को दु:खी देखकर उसे मजा आता है?

उत्तर:- हमें पहले ये जानना चाहिए कि हमें किसने बनाया है? प्यारे बन्धु... आत्मा, परमात्मा व प्रकृति तीनों ही अविनाशी सत्ता है, इनका कोई निर्माण नहीं करता अत: यह प्रश्न ही गलत है। भगवान ने यह संसार नहीं बनाया। उसने जब यह संसार बनाया तो दुनिया स्वर्ग थी और मनुष्य देवता था, वहां दु:ख, अशांति शब्द ही नहीं थे, सबकुछ सम्पूर्ण था। अब जो दुनिया का हाल है, यह पांच विकारों के कारण हुआ है। दु:ख मनुष्य के पाप कर्मों का फल है। यह दु:खी संसार भगवान की नहीं, माया अर्थात् पांच विकारों की रचना है। अपने वत्सो को दु:खी देखकर भगवान अब इस धरा पर आया है और वह सत्य ज्ञान दे रहा है। उसे पाकर ही दु:ख समाप्त हो जाता है। दूसरों के दु:खों में भगवान दु:खी नहीं होता, बल्कि उसे रहम आता है। आप भी उसका ज्ञान लेकर दु:खों से मुक्त हो जाओ। भगवान को यह दु:खी दुनिया देखकर मजा नहीं आता, वह तो दु:ख-हर्त्ता है, अब सबके दु:ख हरने आया है और महाविनाश के द्वारा इस दु:खी दुनिया को समाप्त कर देगा और धरा पर देव-युग का आरम्भ होगा।

प्रश्न:- कई लोग मोक्ष चाहते हैं, कोई मुक्ति के मुमुक्षु हैं। कोई कहते हैं कि आत्मा परमात्मा में लीन हो जायेगी तो कोई कहते हैं मुक्ति से लौटना पड़ेगा। कोई कहते हैं मुक्ति में हम परमात्मा के साथ रहते हैं, वहां परमानन्द है तो कोई कहते हैं कि वहां कोई अनुभूति नहीं है - सत्य क्या है?

उत्तर:- एक बार हमने किसी मुक्ति प्रेमी से पूछा कि आप मुक्ति क्यों चाहते हैं तो बोले मुक्ति में हम परमात्म के समीप परमानन्द में रहेंगे, इसलिए मुक्ति चाहते हैं। हमने पूछा कि आप तो कहते हो कि भगवान हमारे अन्दर ही है, तब उसे छोड़कर आप कहां उसके समीप जाओगे? बेचारे विचार मग्न हो गये। जबकि स्वयं भगवान को भी इस धरा पर आना पड़ता है अर्थात् उसे भी मोक्ष नहीं है, तब भला अन्य को मोक्ष कैसे मिलेगा? आत्मा एक्टर है, वह बिना एक्ट नहीं रह सकती और यदि आत्मा, परमात्मा में लीन हो जाए तो आत्मा का अस्तित्व ही लोप हो जाए, जबकि आत्मा अविनाशी है उसका अस्तित्व सदा ही है। वास्तव में आत्मा मुक्ति में मुक्तिधाम में परमात्मा के पास ही रहती है, वहां क्योंकि आत्मा, शरीर रहित है, इसलिए उसकी मन और बुद्धि निष्क्रिय रहती है, यही कारण है कि वहां कोई अनुभव नहीं है, परन्तु सभी में दिव्य अनुभूति समाई रहती है। यदि किसी ने आम खाया ही न हो, तो वह कैसे बतायेगा कि आम कितना स्वादिष्ट है। यदि मुक्ति से कोई लौटकर ही न आता तो किसने बताया कि मुक्ति पाना सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है। सत्य यही है कि सभी को मुक्ति से लौटना ही होता है, सबका मुक्ति काल भी अलग-अलग होता है। अब मुक्ति दाता स्वयं सभी को मुक्तिधाम ले जाने के लिए आया है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com